

10. चाचा नेहरू का पशुपक्षी-जगत से प्रेम

चाचा नेहरू का पशुपक्षियों से बड़ा प्यार था। उनके घर पर कुत्ते, बिल्ले घोड़े आदि पालतू जीव थे। जब वह सुबह-शाम अपने बगीचे में घूमते तो पक्षियों को दाना देते और उनसे खेलते। इसी तरह शाम को या सबुह जब उनके कुत्ते उन्हें टहलते देखते, तो अपनी जंजीर तान कर उछलते जैसे कर रहे हों कि “हमें खोल दो, हम आपसे खेलेंगे।” नेहरू जी उनकी हरकतें देखकर उनके पास जाते और उन्हें पुचकारते।

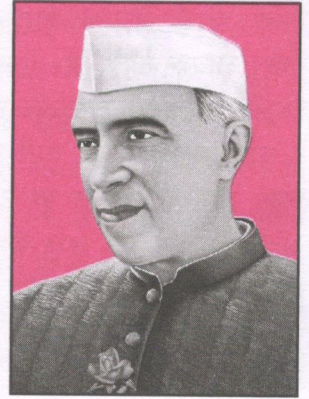
पालतू जानवर ही नहीं, उन्हें सभी पशु-पक्षी प्यारे थे। एक दिन सुबह जब वे बगीचे में घूम रहे थे तो पेड़ से एक चिड़िया गिर पड़ी। उसके पांव में चोट थी। वह घायल होकर तड़प रही थी। नेहरू जी ने उसे उठाया और डॉक्टर को बुलावा भेजा। डॉक्टर से पूछा- “इस चिड़िया को चोट आ गई है। पांव से खून निकल रहा है, क्या यह ठीक हो जाएगी ?”

“हां, पट्टी बांध देने से ठीक हो जाएगी” डॉक्टर ने कहा।

नेहरू जी का नाती संजय उनके पास ही खड़ा था। वह दौड़कर अंदर से दवाई का छोटा बक्स (फस्ट एड बॉक्स) ले लाया। चिड़िया की पट्टी की गई। तीन-चार दिन बाद चिड़िया की टांग ठीक हो गई। नेहरू जी ने फुर्र से चिड़िया को उड़ा दिया। वह अपने बच्चों के पास जाकर बैठ गयी। नेहरू जी भाव-विभोर हो गये तथा उनकी आंखे तरल हो उठी।

ऐसे ही एक बार नेहरू जी देहरादून जेल में थे। एक मैना के जोड़े ने दरवाजे के पास झरोखे में अपना घोंसला बना रखा था। उस अकेली कोठरी में मैना का यह जोड़ा उनके प्यार और दुलार का आधार बन गया। नेहरू जी ने अपनी जीवनी में लिखा है- “मैं उन्हें दाना दिया करता। वे बहुत पालतू हो गई थी। जब कभी उनको सुबह शाम दाना देने में देर हो जाती तो वे मेरे नज़दीक बैठ जाती और जोर-जोर से चीं-चीं कर खाना मांगती। उनके वे इशारे और उनकी वह अधिक पुकार देखते और सुनते ही बनती थी।”

नेहरू जी देहरादून जेल में ही थे। वहां के जेल अफसर के पास एक कुत्तिया थी। कुछ समय बाद उनकी बदली हो गई, वे कुत्तिया वहीं छोड़ गये। बेचारी लावारिस हो गई। बार्डरों के टुकड़े खाकर वह अपना पेट भरती। नेहरू जी जेल के बाहर हवालात में रहते थे। जब वह खाना खाते कुत्तिया दरवाजे के पास आकर टुकुर-टुकुर उन्हें ताकती। वह उसे नियम से रोटी देने लगे। कुछ दिन बाद नेहरू जी के कमरे की मोरी की ओट में उस कुत्तिया ने पांच बच्चे दिए। दो बच्चे तो कोई ले गया, पर तीन वहीं रह गये। उनमें से एक पिल्ली बीमार हो गयी। नेहरू जी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि “उस पिल्ली को छटपटाते देख मुझे तकलीफ होती थी। मैंने बड़ी फिक्र के साथ उसकी सेवा की। कभी-कभी रात को मुझे दस-बारह बार उठकर



उसे संभालना पड़ता, अंत में वह बच गई और मुझे इस बात पर खुशी हुई कि मेरी तीमारदारी काम आई।”

एक बार जबकि नेहरू जी बरेली में थे, एक घटना का उन्होंने बड़ा दिलचस्प उल्लेख किया। बरेली जेल में बंदरों की आबादी खासी थी। उनकी कूद फांद मुँह बनाना आदि हरकतें देखने लायक होती थी। एक घटना का असर मेरे दिल पर रह गया है। एक बंदर का बच्चा किसी तरह हमारी बैरक के घेरे में आ गया। वह दीवार की ऊँचाई लांघ नहीं सकता था। बार्डर ने कुछ नंबरदारों और दूसरे कैदियों से मिलकर उसे पकड़ा और उसके गले में एक छोटी-सी रस्सी बांध दी। दीवार पर उसके मां बाप बंदरों ने यह देखा और वे गुस्से से लाल हो गये। अचानक उनमें एक बड़ा बंदर नीचे कूदा और सीधा भीड़ में उस जगह गिरा जहाँ बच्चा था। बार्डरों ने लाठियां और डंडे घुमाये लेकिन बंदर उनसे लड़ने को तैयार हुआ। अंत में बार्डरों को भागना पड़ा। उनके डंडे और लाठियां वहीं पड़ी रह गयीं और बंदर अपना बच्चा छुड़ा ले गया।”

नेहरू जी को यह बात बिल्कुल नापसंद थी कि वैसे तो लोग जीवदया का इतना बखान करते हैं कि उसे धर्म का प्रश्न बनाया हुआ है परन्तु अपने पालतू जानवरों-बिल्ली, गाय, घोड़ा, कुत्ता और पक्षियों की जरा भी परवाह नहीं करते। गली मुहल्लों में बच्चे घायल कुत्ते या पक्षी को ढेले मार मारकर सताते हैं। यह बड़ी खराब बात है।

* अभ्यास *

1. चाचा नेहरू का पशुपक्षी प्रेम किस प्रकार का था।
2. चाचा नेहरू के जेल में कौन-कौन से मित्र थे ?
3. बड़े बंदर ने बच्चे को किस प्रकार बैरक के घेरे से निकाला ?
4. चाचा नेहरू के पक्षी प्रेम एवम् प्रकृति प्रेम पर अपने अध्यापक से पूछो।
5. लोग जन्तुओं के साथ कैसा व्यवहार करते हैं ?

